



BPSC Mains

Smart Book Notes

2025 More Updates [Hindi]

[Toppers strategy QA pattern Mains study material | Topic Wise]



Save trees. Save life.



Table of Contents

[Toppers strategy QA pattern Mains study material | Topic Wise]

प्रश्न: बांग्लादेश-पाकिस्तान संबंधों में हालिया सुधार भारत के लिए नई रणनीतिक चुनौतियाँ पेश करता है। इस बदलाव को कौन से कारक प्रेरित करते हैं? चर्चा करें कि इस विकास का भारत की विदेश नीति पर क्या प्रभाव पड़ता है और भारत को अपने रणनीतिक हितों को सुरक्षित करने के लिए क्या कदम उठाने चाहिए।

प्रश्न: अमेरिका में ट्रंप के चुनाव का भारत-अमेरिका संबंधों पर प्रभाव पर चर्चा करें। अमेरिकी चुनाव वैश्विक स्तर पर कैसे प्रभाव डालेंगे?

प्रश्न: ट्रम्प 2.0 के तहत भारत-अमेरिका संबंध, चर्चा करें।



mindplan.in



प्रश्न: बांग्लादेश-पाकिस्तान संबंधों में हालिया सुधार भारत के लिए नई रणनीतिक चुनौतियाँ पेश करता है। इस बदलाव को कौन से कारक प्रेरित करते हैं? चर्चा करें कि इस विकास का भारत की विदेश नीति पर क्या प्रभाव पड़ता है और भारत को अपने रणनीतिक हितों को सुरक्षित करने के लिए क्या कदम उठाने चाहिए।

बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच संबंधों में हालिया सुधार का क्षेत्रीय गतिशीलता और भारत की विदेश नीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

बांग्लादेश-पाकिस्तान संबंधों की पृष्ठभूमि

- 1971 में पाकिस्तान से बांग्लादेश की स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप द्विपक्षीय संबंधों में तनाव आया, जिसमें ऐतिहासिक शिकायतें सुलह के लिए एक बड़ी बाधा के रूप में काम कर रही थीं।



- शेख हसीना के कार्यकाल (15 वर्ष) में पाकिस्तान के साथ संबंध ठंडे रहे, जो उनके भारत समर्थक रुख और पाकिस्तानी शासक वर्ग के साथ उनके परिवार के इतिहास से और खराब हो गए।
- 2016 में राजनयिक तनाव: दोनों देशों ने राजनयिकों को निष्कासित कर दिया, जिससे बिगड़ते संबंधों पर प्रकाश डाला गया।

पाकिस्तान-बांग्लादेश संबंधों में हालिया घटनाक्रम

- बांग्लादेश ने रंगपुर में एक उच्च स्तरीय पाकिस्तानी सैन्य प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी की।
- बांग्लादेश सेना के दूसरे-इन-कमांड लेफ्टिनेंट-जनरल एस.एम. कमर-उल-हसन की रावलपिंडी यात्रा, पाकिस्तानी सेना, नौसेना और वायु सेना प्रमुखों से मिलने के लिए।
- ढाका और इस्लामाबाद के बीच सीधी उड़ानें फिर से शुरू करना।



- बांग्लादेश की अरब सागर में पाकिस्तान के अमान 2025 नौसैनिक अभ्यास में भागीदारी, जिसमें एक दशक से अधिक समय में पहली बार एक प्रमुख बांग्लादेशी युद्धपोत को पाकिस्तान में तैनात करना शामिल है।

बदलाव को प्रेरित करने वाले अंतर्निहित कारक

- **भारत विरोधी भावना:** बांग्लादेश और पाकिस्तान दोनों में राजनीति आम भारत विरोधी भावना पर सवार है।
- **विदेश नीति का विविधीकरण:** ढाका उपमहाद्वीप में अपनी विदेश नीति के प्रक्षेपवक्र को विविधता प्रदान करना चाहता है।
- **नए सहयोगियों की तलाश:** बांग्लादेश राष्ट्रवाद के एक नए रूप, सरकार के एक नए रूप और नए सहयोगियों की तलाश में है।
- **माफी की कम मांग:** मुहम्मद यूनूस ने पाकिस्तान से "1971 के नरसंहार" के लिए माफी मांगने की ढाका की मांग को कम कर दिया है, अब "मुद्दों के समाधान" की मांग कर रहे हैं।



- **आर्थिक विचार:** पाकिस्तान का लक्ष्य एक वर्ष के भीतर बांग्लादेश के साथ वार्षिक व्यापार को वर्तमान स्तर से चार गुना से अधिक बढ़ाना है। अगस्त और दिसंबर 2024 के बीच द्विपक्षीय व्यापार में अनुमानित 27% की वृद्धि हुई।

जमीनी हकीकत और चुनौतियाँ

- **बांग्लादेश में जनमत:** कई बांग्लादेशी अभी भी पाकिस्तान से अलगाव को अपनी राष्ट्रीय पहचान की आधारशिला के रूप में देखते हैं, जिससे इस ऐतिहासिक शिकायत का समाधान किए बिना पर्याप्त राजनयिक प्रगति चुनौतीपूर्ण हो जाती है।
- **1971 के मुक्ति युद्ध के घाव** पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच संबंधों को परिभाषित करते हैं। पाकिस्तानी सेना द्वारा किए गए अत्याचारों ने बांग्लादेश की राष्ट्रीय चेतना पर एक अमिट छाप छोड़ी है।
- **पाकिस्तान से सीमित लाभ:** इस्लामाबाद के साथ साझेदारी ढाका के लिए सीमित रणनीतिक और आर्थिक लाभ प्रदान



करती है, दोनों देशों की आर्थिक वास्तविकताओं के बीच गलत संरेखण को देखते हुए।

- **भौगोलिक अलगाव:** भारतीय क्षेत्र द्वारा बांग्लादेश और पाकिस्तान का भौगोलिक अलगाव सुचारू व्यापार के लिए कनेक्टिविटी और राजनीतिक बाधाएं पैदा करता है।

भारत के लिए निहितार्थ

- **भारत के प्रभाव का मुकाबला करना:** राजनयिक युद्धाभ्यास को सुश्री हसीना के सत्ता से बेदखल होने के बाद ढाका में नई दिल्ली के लड़खड़ाते प्रभाव का मुकाबला करने के पाकिस्तान के प्रयासों के रूप में देखा जाता है।
- **शत्रुतापूर्ण पड़ोसियों की बढ़ती सूची:** शत्रुतापूर्ण पड़ोसियों की गिनती अब बढ़ रही है, जिसमें मालदीव और नेपाल का चीन के साथ बढ़ता संरेखण शामिल है, नई दिल्ली के लिए चिंता का एक नया कारण है।



- **संभावित धुरी:** बांग्लादेश, चीन और पाकिस्तान को शामिल करने वाली धुरी की संभावना है।
- **सुरक्षा चिंताएँ:** भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में सुरक्षा भारत के लिए चिंता का विषय है।

भारत का दृष्टिकोण

- **आर्थिक और भौगोलिक वास्तविकताओं को समझना:** भारत को आर्थिक और भौगोलिक वास्तविकताओं की समझ के आधार पर अपना दृष्टिकोण रखना चाहिए।
- **आर्थिक निर्भरता:** बांग्लादेश को भारत पर अपनी भौगोलिक निकटता और आर्थिक निर्भरता को देखते हुए स्पष्ट रूप से भारत विरोधी रुख अपनाने में चुनौती मिलेगी।
- **2023 में,** बांग्लादेश को भारतीय निर्यात 11.25 बिलियन डॉलर था, जबकि भारत को बांग्लादेश का निर्यात लगभग 2 बिलियन डॉलर था।



- **सतर्कता और रेड लाइन्स:** भारत को सतर्क रहना चाहिए और आतंकवाद, हथियारों के व्यापार, संयुक्त सैन्य अभ्यास और समुद्री सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बांग्लादेश के साथ अपनी रेड लाइन्स स्पष्ट करनी चाहिए।
- **रचनात्मक जुड़ाव:** नई दिल्ली को लोगों से लोगों के संपर्क, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विकास परियोजनाओं पर जोर देते हुए बांग्लादेश के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ना चाहिए। दोनों देशों को सीमा व्यापार और तस्करी, जल बंटवारे और शरणार्थी चिंताओं पर सहयोग जारी रखना चाहिए।
- **भावनाओं को संबोधित करना:** नई दिल्ली को बांग्लादेश में प्रचलित भारत विरोधी और हिंदू विरोधी भावनाओं को सक्रिय रूप से संबोधित करने और ढाका के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए अपने आर्थिक जुड़ाव का लाभ उठाने की आवश्यकता है।



- बांग्लादेश के भीतर भारत के अनुकूल एक निर्वाचन क्षेत्र बनाए रखना दीर्घकालिक रणनीतिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है।



प्रश्न: अमेरिका में ट्रंप के चुनाव का भारत-अमेरिका संबंधों पर प्रभाव पर चर्चा करें। अमेरिकी चुनाव वैश्विक स्तर पर कैसे प्रभाव डालेंगे?

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव 5 नवंबर, 2024 को हुआ, जिसमें ट्रंप ने 6 नवंबर को जीत का दावा किया। डोनाल्ड ट्रंप का फिर से चुनाव (45वें राष्ट्रपति 2017 से 2021; 47वें राष्ट्रपति 2024) एक नई भू-राजनीतिक गतिशीलता स्थापित करता है, विशेष रूप से व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करता है। यह उनका दूसरा और अंतिम कार्यकाल होगा।

व्यापारिक संबंध

- ट्रंप की संरक्षणवादी नीतियां भारतीय निर्यात पर उच्च शुल्क का कारण बन सकती हैं, विशेष रूप से आईटी, फार्मास्यूटिकल्स और वस्त्र जैसे प्रमुख क्षेत्रों को प्रभावित कर सकती हैं।
- उन्होंने भारत को "शुल्क दुर्व्यवहार" बताया है और फिर से चुने जाने पर पारस्परिक शुल्क की धमकी दी है।



- संभावित चुनौतियों के बावजूद, चीन के विकल्पों की तलाश कर रही अमेरिकी फर्मों के कारण विनिर्माण केंद्र के रूप में भारत की भूमिका बढ़ सकती है।

आव्रजन प्रभाव

एच-1बी वीजा कार्यक्रम पर ट्रंप के पिछले प्रतिबंधों को फिर से शुरू किया जा सकता है, जिससे भारतीय तकनीकी कर्मचारी और कुशल श्रम पर निर्भर फर्म प्रभावित हो सकती हैं।

भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि व्यापार और आव्रजन पर बातचीत मुश्किल हो सकती है, लेकिन ट्रंप और मोदी के बीच आम तौर पर सकारात्मक संबंधों पर जोर दिया।

मुद्रास्फीति और विवेकाधीन खर्च

व्यापार बाधाओं के परिणामस्वरूप उच्च मुद्रास्फीति दर में कटौती को बाधित कर सकती है और आय असमानता को बढ़ा सकती है, जिससे मध्यम वर्ग की खपत नकारात्मक रूप से प्रभावित होगी।



प्रभाव विश्लेषण: मध्यम वर्ग के उपभोक्ताओं के लिए हानिकारक।

फार्मा निर्यात

फार्मा निर्यात उच्च व्यापार बाधाओं और ओबामाकेयर के प्रति प्रतिकूल नीतियों के कारण प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने की संभावना है।

प्रभाव विश्लेषण: निर्यात पर नकारात्मक प्रभाव।

आईटी और आव्रजन

एच-1बी वीजा पर सख्त रुख के कारण आईटी सेवा फर्मों का लाभ कम हो सकता है; हालांकि, अनुकूल कर नीतियां कुछ नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकती हैं।

प्रभाव विश्लेषण: लाभ पर संभावित नकारात्मक प्रभाव।

ऊर्जा - तेल



अमेरिका में बढ़े हुए तेल अन्वेषण से कीमतें स्थिर हो सकती हैं, जिससे भारत के आयात बिल और तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) को लाभ होगा।

प्रभाव विश्लेषण: भारत की अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक।

सैन्य सहयोग

जेट इंजन निर्माण के लिए जीई-एचएएल सौदे जैसे समझौतों के साथ ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान रक्षा संबंध मजबूत हुए।

विशेष रूप से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन के प्रभाव का मुकाबला करने में एक मजबूत सैन्य साझेदारी की उम्मीद है।

क्वाड गठबंधन को एक नवीनीकृत ट्रंप प्रशासन के तहत और अधिक सैन्य सहयोग दिखाई दे सकता है।

भारतीय मुद्रा

बढ़ती मुद्रास्फीति और लंबे समय तक उच्च ब्याज दरों के कारण रुपये में गिरावट आ सकती है।



राजनयिक परिदृश्य

ट्रंप की "अमेरिका फर्स्ट" नीति से अलगाववाद बढ़ सकता है, लेकिन भारत को वैश्विक स्तर पर अपनी बात रखने के अवसर भी मिलते हैं।

चीन का मुकाबला करने में भारत के रणनीतिक हित अमेरिकी लक्ष्यों के साथ संरेखित हो सकते हैं, जिसके लिए जटिल भू-राजनीतिक गतिशीलता के सावधानीपूर्वक नेविगेशन की आवश्यकता होती है।

आर्थिक भविष्यवाणियाँ

विश्लेषकों का अनुमान है कि ट्रंप की वापसी से भारत में मुद्रास्फीति और आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले उच्च शुल्क लग सकते हैं।

अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, हाल के वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार लगभग 190 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है।



संरक्षणवाद पर ध्यान केंद्रित करने से भारत के निर्यात-निर्भर क्षेत्रों में बाधा आ सकती है, जबकि अमेरिकी बाजारों पर निर्भर घरेलू व्यवसायों के लिए चुनौतियां पेश हो सकती हैं।

भारतीय निर्यात पर प्रभाव

- **फार्मास्यूटिकल्स और आईटी सेवाएँ:** भारत से अमेरिका में होने वाले फार्मास्यूटिकल निर्यात को चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, विशेष रूप से एच-1बी वीजा पर ट्रंप के संभावित सख्त रुख के कारण, जिससे अस्वीकृति बढ़ सकती है और भारत से कुशल श्रम पर भारी निर्भरता रखने वाली भारतीय आईटी सेवा फर्मों के लाभ प्रभावित हो सकते हैं। यह उम्मीद की जाती है कि ट्रंप प्रशासन भारत से निर्यात किए जाने वाले सामानों पर उच्च शुल्क लगा सकता है, जिससे फार्मास्यूटिकल्स और वस्त्र जैसे क्षेत्र प्रभावित हो सकते हैं, जो भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं।



- **व्यापार संतुलन:** अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, वित्तीय वर्ष 24 में द्विपक्षीय व्यापार लगभग 120 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। यह संबंध भारत के लिए अनुकूल है, क्योंकि अमेरिका भारत के कुल निर्यात का लगभग 18% है, जो 2010-11 में 10% से काफी अधिक है। हालाँकि, ट्रंप की पिछली बयानबाजी, जिसमें भारत को "व्यापार दुर्व्यवहार" कहा गया था, बताती है कि वह भारत के लिए प्रतिकूल व्यापार शर्तों पर फिर से बातचीत करना चाह सकते हैं।

शुल्क नीतियाँ और आर्थिक प्रभाव

- **बढ़े हुए शुल्क:** ट्रंप प्रशासन से संरक्षणवादी नीतियों को पुनर्जीवित करने की उम्मीद है, जिसमें भारतीय सामानों पर उच्च शुल्क लगाना शामिल है। अपने पहले कार्यकाल के दौरान, उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा प्रावधानों के तहत भारत सहित विभिन्न देशों से इस्पात और एल्यूमीनियम आयात पर महत्वपूर्ण शुल्क



लगाया। इसी तरह के उपायों की फिर से उम्मीद की जा सकती है, जिससे भारत के निर्यात क्षेत्रों पर दबाव पड़ेगा।

- **मुद्रास्फीति संबंधी चिंताएँ:** पीटरसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स ने अनुमान लगाया है कि ट्रंप की आर्थिक नीतियों से अमेरिका में मुद्रास्फीति बढ़ सकती है, जिससे उपभोक्ता कीमतों में काफी वृद्धि हो सकती है। इस मुद्रास्फीति से वस्त्र और चमड़े के उत्पादों जैसे श्रम-गहन वस्तुओं के भारतीय निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, जो अमेरिकी बाजार में मूल्य परिवर्तनों के प्रति संवेदनशील हैं।

चुनौतियों के बीच रणनीतिक अवसर

- **चीन से अलग होना:** जबकि ट्रंप की नीतियां भारतीय निर्यात के लिए चुनौतियां पेश कर सकती हैं, वे अवसर भी पैदा कर सकती हैं। चीन से अलग होने पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने से अमेरिकी कंपनियां भारत में वैकल्पिक विनिर्माण ठिकानों की तलाश कर सकती हैं, खासकर अगर अमेरिका और चीन के



बीच तनाव बढ़ता है। यह बदलाव विनिर्माण केंद्र के रूप में भारत की स्थिति को बढ़ा सकता है।

- **निवेश प्रवाह:** ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान, भारत में अमेरिकी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में काफी वृद्धि हुई। यदि ट्रंप चीन के खिलाफ एक रणनीतिक भागीदार के रूप में भारत के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण बनाए रखते हैं, तो यह महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निरंतर निवेश प्रवाह का समर्थन कर सकता है।

भारत-अमेरिका रक्षा संबंधों पर प्रभाव

- **मजबूत रक्षा संबंध:** भारत के अमेरिका के साथ रक्षा संबंधों के मजबूत रहने और बढ़ने की उम्मीद है, जो साझा हितों, विशेष रूप से चीन से संबंधित हितों से प्रेरित है। विशेषज्ञ एक स्वतंत्र और खुले इंडो-पैसिफिक क्षेत्र को बनाए रखने के लिए इस साझेदारी के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।



- **द्विदलीय समर्थन:** ट्रंप और बाइडन दोनों प्रशासन भारत के समान रूप से सहायक रहे हैं, जिन्होंने पिछले आठ वर्षों में लगभग 15 बिलियन डॉलर के हथियारों के सौदों में योगदान दिया है। यह द्विदलीय समर्थन भारत-अमेरिका रक्षा साझेदारी के रणनीतिक महत्व को रेखांकित करता है।

प्रमुख हथियार बिक्री

ट्रंप के पिछले कार्यकाल के दौरान, नीचे दी गई तालिका में विस्तृत रूप से भारत को कई उल्लेखनीय हथियार बिक्री की गई:

Arms Sale	Value	Date
24 MH-60R Seahawk helicopters	\$2.6 billion	April 2019
Integrated Air Defence Weapon System (IADWS)	\$1.9 billion	February 2020



हथियारों के आयात में वृद्धि

2019 और 2023 के बीच वैश्विक हथियार आयात में भारत की हिस्सेदारी बढ़कर 9.8% हो गई। इसके अतिरिक्त, भारत के हथियार आयात में अमेरिका की हिस्सेदारी दो दशक पहले 8% से बढ़कर 2023 में 13% हो गई, जो अमेरिकी रक्षा प्रौद्योगिकी पर बढ़ती निर्भरता को दर्शाती है।

रक्षा समझौते

ट्रंप की अध्यक्षता के दौरान दो महत्वपूर्ण रक्षा समझौते-संचार संगतता और सुरक्षा समझौता (COMCASA) और बुनियादी विनिमय और सहयोग समझौता (BECA) पर हस्ताक्षर किए गए। ये समझौते दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग और अंतरसंचालनीयता को बढ़ाते हैं।

रणनीतिक व्यापार प्राधिकरण



ट्रंप ने भारत को रणनीतिक व्यापार प्राधिकरण (एसटीए-1) का दर्जा दिया, जिससे नाटो सहयोगियों के लिए पहले आरक्षित संवेदनशील प्रौद्योगिकियों तक पहुंच की अनुमति मिली। यह दर्जा गहरे रक्षा सहयोग को सुगम बनाने की उम्मीद है।

संभावित लाभ

विशेषज्ञों का सुझाव है कि ट्रंप के नेतृत्व में, भारत को अतिरिक्त लाभ दिखाई दे सकते हैं, जैसे कि आतंकवाद से संबंधित संघर्षों में कमी और खालिस्तान आंदोलन पर संभावित रोक। इससे क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता और स्थिर हो सकती है।

पारस्परिकता की आवश्यकता

पूर्व राजदूत जयंत दासगुप्ता जोर देते हैं कि जबकि रक्षा संबंध मजबूत रहे हैं, उन्हें एकतरफा नहीं होना चाहिए। भारत को संबंधों को संतुलित करने के लिए रक्षा उत्पादों के निर्यात पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। वित्तीय वर्ष 24 में भारत के 2-2.5 बिलियन डॉलर के रक्षा निर्यात में अमेरिका का लगभग 50% हिस्सा रहा।



आगे की चुनौतियाँ

जबकि रक्षा संबंध मजबूत हैं, व्यापार मुद्दों और भारत के गुटनिरपेक्ष रुख जैसी चुनौतियाँ भविष्य में संबंधों में घर्षण पैदा कर सकती हैं। इन जटिलताओं को नेविगेट करना साझेदारी को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

यह संरचित सारांश डोनाल्ड ट्रंप की अध्यक्षता के आलोक में विकसित हो रहे भारत-अमेरिका रक्षा संबंधों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है, जो स्पष्टता के लिए पैराग्राफ और तालिका दोनों प्रारूपों में प्रमुख पहलुओं को उजागर करता है।



प्रश्न: ट्रम्प 2.0 के तहत भारत-अमेरिका संबंध, चर्चा करें।

- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दूसरे कार्यकाल के लिए अपने उद्घाटन भाषण में अमेरिका को "उदारवादी अतिवाद" और "पतनवादी निराशावाद" से दूर ले जाने के लिए "सामान्य ज्ञान की क्रांति" की घोषणा की।
- घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय संकटों के लिए "भ्रष्ट प्रतिष्ठान" की आलोचना करते हुए उन्होंने आव्रजन, व्यापार, मुक्त भाषण, पहचान की राजनीति और पर्यावरण संबंधी जनादेश में साहसिक बदलाव का वादा किया।
- ट्रम्प ने घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए आयात पर कर लगाने के समर्थन की पुनः पुष्टि की तथा आंतरिक राजस्व सेवा के पूरक के रूप में आयात पर करों को संभालने के लिए बाह्य राजस्व सेवा की योजना प्रस्तुत की।

भारत-अमेरिका संबंधों की सामान्य प्रकृति



● भारत-अमेरिका संबंधों का ऐतिहासिक संदर्भ

○ भारत-अमेरिका संबंध दशकों में विकसित हुए हैं, चुनौतियों पर काबू पाया है और साझेदारियां बनाई हैं:

- प्रधानमंत्री वाजपेयी: उन्होंने दोनों देशों को "स्वाभाविक सहयोगी" बताया और साझा मूल्यों और भू-राजनीतिक हितों पर जोर दिया।
- राष्ट्रपति ओबामा: इस साझेदारी को "21वीं सदी का निर्णायक रिश्ता" बताया।
- प्रधानमंत्री मोदी: 2016 में कहा गया था कि साझेदारी ने दीर्घकालिक गठबंधन बनाने के लिए ऐतिहासिक हिचकिचाहट को दूर कर लिया है।

● आर्थिक एवं व्यापार सहयोग

○ व्यापार संबंध: अमेरिका भारत के लिए वस्तुओं और सेवाओं का सबसे बड़ा बाजार है।



○एफडीआई: 2022 में भारत में अमेरिकी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 51.6 बिलियन डॉलर था।

○डब्ल्यूटीओ विवाद: दोनों देशों ने सात लंबित विवादों को सुलझाया, जिससे व्यापार संबंध मजबूत हुए।

●तकनीकी और रणनीतिक सहयोग

○भारत और अमेरिका प्रौद्योगिकी और नवाचार के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग करते हैं, जिनमें शामिल हैं:

■उन्नत प्रौद्योगिकियाँ : ब्लॉकचेन, स्वच्छ ऊर्जा, साइबर विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण।

■स्वास्थ्य एवं कृषि : स्वास्थ्य सुरक्षा एवं कृषि उन्नति पर सहयोग।

■सामरिक व्यापार प्राधिकरण : 2018 में भारत को टियर 1 का दर्जा दिए जाने से उसे विनियमित अमेरिकी



प्रौद्योगिकियों तक लाइसेंस-मुक्त पहुंच की अनुमति मिल गई।

ट्रम्प 1.0 के तहत भारत-अमेरिका संबंध

- डोनाल्ड ट्रम्प के पहले कार्यकाल के दौरान, भारत और अमेरिका के बीच मजबूत संबंध थे, जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति ट्रम्प के बीच व्यक्तिगत तालमेल से चिह्नित थे।
- मुख्य बातें निम्नलिखित हैं:
 - क्वाड पहल को पुनर्जीवित करना।
 - अमेरिकी प्रशांत कमान का नाम बदलकर अमेरिकी हिंद-प्रशांत कमान रखना।
 - भारत को एक वैश्विक शक्ति और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक साझेदार के रूप में उभरने की मान्यता देना।

ट्रम्प का रोमांचकारी नए युग का विजन



- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने दूसरे उद्घाटन भाषण में अमेरिका की घरेलू और विदेश नीतियों में परिवर्तन लाने के लिए एक साहसिक एजेंडा प्रस्तुत किया।
- उन्होंने उदारवादी नीतियों को पलटने और राष्ट्रीय संप्रभुता को बहाल करने, पारंपरिक मूल्यों को नवीनीकृत करने तथा आर्थिक और सैन्य ताकत को बढ़ाने के लिए “अमेरिका फर्स्ट” एजेंडे को आगे बढ़ाने पर जोर दिया।
- **आर्थिक पुनरुद्धार और ऊर्जा स्वतंत्रता**
 - ट्रम्प ने मुद्रास्फीति को कम करके और विकास पर पर्यावरणीय बाधाओं को हटाकर अमेरिकी अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण की शपथ ली।
 - वह अपने चुनाव समर्थकों की प्राथमिकताओं के अनुरूप, तेल के लिए ड्रिलिंग सहित ऊर्जा उत्पादन का विस्तार करने



तथा जलवायु नियंत्रण को समाप्त करने की योजना बना रहे हैं।

●विदेश नीति: मुखर और लेन-देन संबंधी

- अलगाववाद को अस्वीकार करते हुए ट्रम्प ने दूर के संघर्षों की तुलना में अमेरिकी सीमाओं की रक्षा को प्राथमिकता देने का वादा किया, जबकि विदेश में "शांति निर्माता" का रुख अपनाया।
- उनकी नीतियों का लक्ष्य रणनीतिक हितों पर ध्यान केंद्रित करते हुए वैश्विक प्रधानता पुनः प्राप्त करना है, जिसमें पनामा नहर पर मुखर दावे और मैक्सिको की खाड़ी का नाम बदलकर "अमेरिका की खाड़ी" रखना शामिल है।

भारत के लिए चुनौतियाँ



- भारत, जिसने हाल के दशकों में अमेरिका के साथ मजबूत संबंध साझा किए हैं, को ट्रम्प के अधीन लेन-देन संबंधी रिश्ते के लिए तैयार रहना चाहिए।
- भारत में व्यापार, आब्रजन और आंतरिक सुधार इस नई गतिशीलता को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।
- भारतीय बाजार ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के लिए तैयार
 - डोनाल्ड ट्रम्प के संयुक्त राज्य अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में पदभार ग्रहण करने के साथ ही भारतीय बाजार सतर्क रुख अपना रहे हैं।
 - जबकि नवंबर में ट्रम्प के चुनाव ने सेंसेक्स को 900 अंकों से अधिक की बढ़त दिलाई, बाजार प्रतिभागी अब उनकी नीति घोषणाओं के बारे में अनिश्चितता को देखते हुए "प्रतीक्षा करें और देखें" दृष्टिकोण अपना रहे हैं।
- संभावित चालक और बाजार प्रभाव



- **कर कटौती उत्प्रेरक के रूप में:** आगामी बजट और संभावित कर दर कटौती से बाजार की गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है।
- **ट्रम्प की टैरिफ नीतियाँ:** हालाँकि ट्रम्प ने टैरिफ बढ़ाने का संकेत दिया है, लेकिन इसकी सीमा अभी भी स्पष्ट नहीं है। चीन पर नकारात्मक प्रभाव डालने वाली नीतियों से भारतीय बाजारों को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ हो सकता है।
- **डॉलर और रुपया रुझान:** कमजोर होता डॉलर और रुपया-डॉलर व्यापार गतिशीलता पर नजर रखना महत्वपूर्ण कारक हैं।
- **भारत की सामरिक स्वायत्तता और चुनौतियाँ**
 - जबकि भारत को अमेरिकी समर्थन से लाभ होगा, वह रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने का भी प्रयास करेगा तथा



रूस सहित अपने राजनयिक साझेदारियों के साथ क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताओं को संतुलित करेगा।

- भारत संभवतः अमेरिका के साथ अत्यधिक तालमेल का विरोध करेगा, तथा ट्रम्प प्रशासन की लागत-लाभ अपेक्षाओं का प्रबंधन करते हुए क्वाड जैसी पहलों में निरंतरता की मांग करेगा।

निष्कर्ष

ट्रम्प की नीतियों और उनके निहितार्थों के सामने आने के बाद भारतीय बाजार सतर्क बने हुए हैं। फिलहाल, बजट, कर कटौती और मुद्रा प्रवृत्तियाँ ही बाजार को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं, जबकि ट्रम्प के एजेंडे का मूल्यांकन स्पष्टता आने पर किया जाएगा।